25 आकलन में प्रोजेक्ट, क्षेत्र कार्य और खोज की भूमिका

श्रीपर्णा



''हर महत्वपूर्ण चीज गिनी नहीं जा सकती, और हर गिनी जा सकने वाली चीज महत्वपूर्ण नहीं होती।''

— अलबर्ट आइंस्टीन

एक अनुभव

सामाजिक अध्ययन का एक पाठ शुरू होता है दस साल की उम्र के छोटे बच्चों की, ग्रामीण महाराष्ट्र की उस पहाड़ी से नीचे की पैदल यात्रा से, जिस पर उनका स्कूल स्थित है। वे नीचे गाँव की ओर जा रहे हैं जहाँ उन्हें उस नदी का अध्ययन करना है जो कई तरह से उनके जीवन का हिस्सा है। उनका काम कक्षा में ही शुरू हो गया था जब उनसे पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों से उस नदी के सही–सही मार्ग को चिन्हित करने के लिए कहा गया था। अब उन्हें इससे अधिक नजदीकी सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करना है: नदी में और उसके आस–पास मौजूद जीव–जन्तुओं (विभिन्न प्रकार की मछलियाँ, चिड़ियाएँ, उभयचर और सरीसृप), और उन मछुआरों के बारे में जानकारी हासिल करना जिनका जीवन इस नदी के इर्द–गिर्द घूमता है। उन्हें एक दिलचस्प तथ्य का पता चलता है कि गाँव में स्थाई तौर पर रहने वाले स्थानीय मछुआरों के अलावा, कुछ ऐसे मछुआरे भी हैं जो हर वर्ष आँध्र प्रदेश से यहाँ आते हैं और पानी में झींगा मछलियाँ और केंकड़े छोड़ते हैं। वे उन्हें कुछ महीने नदी में पनपने देते हैं, और जब वे पूरी तरह बड़े हो जाते हैं तो वे उन्हें पकड़ने वापस आते हैं और फिर उन्हें दूसरे राज्यों में भेज देते हैं और इस तरह उन्हें बड़ा मुनाफा हासिल होता है। इस सुनसान इलाके में इस तरह फल–फूल रहे उद्यम के संचालन की व्यवस्था उन सब बच्चों के लिए एक आश्चर्यजनक रहस्योद्घाटन है। इन प्रवासी मछुआरों के परिवारवालों द्वारा तटों पर लगाए गए अस्थाई नीले तम्बुओं से उनकी इस उद्यमिता की दिलचस्प कहानी के बारे में बहुत कम जानकारी मिलती है, जिसके बारे में पहाड़ी के ऊपर रह रहे लोग भी अब तक अनजान थे। बच्चे इन मछुआरों के घरों में जाते हैं; स्थान परिवर्तन करने के दौरान उनके जीवन, संघर्षों और खुशियों के बारे में पता करते हैं जो किसी भी तरह से कोई पाठ्यपुस्तक नहीं समझा सकती थी। वे यह भी पता करते हैं कि दूसरे राज्य से खास मौसमों में आने वाले इन मछुआरों का स्थानीय लोगों के सामाजिक और आर्थिक जीवन पर क्या असर पड़ता है। कुछ बच्चे मछली पकड़ने के बारे में नैतिक दृष्टि से प्रश्न पूछते हैं, हालाँकि उन्हें यह अहसास है कि अनेक लोगों का जीवन इस पर निर्भर करता है।

इसके बाद, वे नदी पर बने बाँध को नजदीक से देखते हैं, यह देखने के लिए कि वह किस तरह काम करता है। उसके स्थानीय इंजीनियर से साक्षात्कार करने से उन्हें पता चलता है कि इस क्षेत्र में इस बाँध की क्या आवश्यकता है, इससे कितनी बिजली पैदा होती है, गाँव वालों से हुए संघर्ष की दास्तान, और यह भी कि किस तरह इस बाँध को बनाने के खिलाफ दस वर्षों तक आन्दोलन चलाया गया। अन्त में सभी यह समझ जाते हैं कि बाँध की कहानी इतनी आसान नहीं है। बाँध बनने से आखिरकार लोग विस्थापित हुए थे और उसके कारण एक पूरा गाँव पानी में समा गया था। हालाँकि इंजीनियर उन्हें यह बताने का प्रयास करता है कि विस्थापित लोगों को पर्याप्त रूप से मुआवजा दिया गया था, और इस बाँध को बनाए जाने के फायदे स्थानीय लोगों को हुए नुकसान से कहीं अधिक थे, फिर भी छोटे बच्चे तक यह समझ जाते हैं कि इस कहानी में इसके आगे और भी कई पहलू जुड़े हैं। वे स्थानीय गाँववालों से मिलने का फैसला करते हैं जिनमें से कुछ उनके स्कूल में काम करने वाले कर्मचारी भी हैं। उनसे हुई बातचीत से उन्हें इस कहानी का पूरी तरह से भिन्न पहलू पता चलता है। वह कहानी जिसमें अपना घर और जमीन खोने की, सरकार ने जो वादा किया था वैसा मुआवजा न मिलने की, या फिर उनकी पुरानी जमीन की तुलना में कम गुणवत्ता वाली जमीन मिलने की, नाराजगी और हताशा है। नजदीक बहने वाली नदी से मिली इन नई जानकारियों से उत्साहित होकर छात्र निर्णय करते हैं कि वे अपनी खोज को रिपोर्टों, चित्रों, प्रेरित रेखांकनों और साक्षात्कारों के जरिए बाकी स्कूल के साथ साझा करेंगे।

> *किसी ऐसी गतिविधि को करने का क्या मूल्य है जिसे सही–सही और पर्याप्त रूप से मापा नहीं जा सके? एक ऐसे देश में जहाँ आकलनका इतिहास प्रायः पारम्परिक कागज–कलम वाली परीक्षा का रहा है, यह पूछना स्वाभाविक है कि क्या प्रोजेक्टों, क्षेत्र कार्य और ऐसे अन्य अनुभवों का आकलनकरने की गुंजाइश है?*

इस यात्रा की उपलब्धि को ध्यान में रखते हुए, उस प्रश्न पर विचार करते हुए जो विषय के रूप में लिखने को दिया गया है, मुझे यह अहसास होता है कि मुझे अपनी बात को भी सन्दर्भ से जोड़ना होगा क्योंकि मैं एक ऐसे संसार में रहती हूँ जहाँ हर चीज मापी जाती है।

किसी ऐसी गतिविधि को करने का क्या मूल्य है जिसे सही–सही और पर्याप्त रूप से मापा नहीं जा सके? एक ऐसे देश में जहाँ आकलन का इतिहास प्रायः पारम्परिक कागज–कलम वाली परीक्षा का रहा है, यह पूछना स्वाभाविक है कि क्या प्रोजेक्टों, क्षेत्र कार्य और ऐसे अन्य अनुभवों का आकलन करने की गुंजाइश है? क्या यह आकलन औपचारिक परीक्षाओं से हो सकता है, या फिर हमें और अधिक प्रामाणिक, समेकित और समग्र रूपी आकलन तकनीकों की आवश्यकता है ताकि छात्र के सीखने का ठीक आकलन हो सके?

मूल्य

ऊपर दिए गए अनुभव के सन्दर्भ में विचार करें तो यह सवाल पूछा जा सकता है कि इसने छात्रों के सीखने के अनुभव को किस तरह समृद्ध किया? क्षेत्र भ्रमण से उन्हें एक ऐसा प्रामाणिक अनुभव मिला जिसने उनकी रुचि को जगाया, उन्हें बाँधे रखा और उनकी जिज्ञासा को बढ़ाया। ऐसे अनुभव छात्रों को अपनी कक्षा की बाहर की दुनिया से सम्पर्क करने का, स्वयं चीजों को खोजने का, तथ्यों का विश्लेषण करने (जिसे कई बार भ्रमवश तथ्यों का आशय समझना मान लिया जाता है) का, किसी स्थिति पर विचार करने का, प्रश्नों के जवाब देने का, और अक्सर समस्याओं के मौलिक हल निकालने का अवसर प्रदान करते हैं। इससे उनके सामने लोगों के बहुआयामी दृष्टिकोण भी प्रगट होते हैं।

किसी सामान्य प्रोजेक्ट में, छात्रों के समूह किसी चीज का अन्वेषण करने और उसे समझने के साझा उद्देश्य से साथ काम करते हैं। छात्रों के प्रदर्शन के आकलन का आधार उसके परिणाम की गुणवत्ता, विषयवस्तु की समझ की प्रदर्शित गहराई, और सीखने की अनवरत प्रक्रिया में हुए योगदानों को बनाया जा सकता है। छात्रों का व्यक्तिगत तौर पर आकलन किया भी जा सकता है और नहीं भी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रोजेक्ट, छात्रों को अपने स्वयं के विचारों और तर्कों पर मनन करने, आलोचनात्मक ढंग से सोचने, अपने विकल्प चुनने, अपनी राय को सबके सामने रखने और इस तरह बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेने के अवसर निर्मित करते हैं। ऐसे अनुभव उन्हें विषयवस्तु की गहरी समझ विकसित करने में भी सहायता प्रदान करते हैं, क्योंकि वे एक प्रत्यक्ष सन्दर्भ से सीख रहे होते हैं। वे ऐसे छात्रों में भी सीखने का उत्साह जगाते हैं जिन्हें कक्षाएँ आमतौर पर बोझिल और अर्थहीन लगती हैं।

सीखने का प्रदर्शन

अनुभवों से सीखे गए ज्ञान को कई गैर–पारम्परिक तरीकों से प्रस्तुत करना सम्भव हैः रिपोर्ट, पॉवर–पाइन्ट प्रैजेंटेशन, चार्ट, रेखांकन, कोलाज, निबन्ध, कविताएँ, प्रहसन, मॉडल, स्क्रैप–बुक इत्यादि।

कौशलों का विकास

ऐसे अनुभवों के द्वारा छात्रों में कई कौशल विकसित किए जा सकते हैंः शोध और पूछताछ के कौशल, संवाद और प्रस्तुतिकरण के कौशल, व्यवस्था करने और समय–प्रबन्धन के कौशल, स्वयं के आकलन और मनन के कौशल, समूह में भागीदारी और नेतृत्व के कौशल।

आकलन की रणनीति

एक ऐसे शिक्षक की भाँति जो ऊपर दिए गए अनुभवों का हिस्सा रही है, मैं स्वयं से पूछती हूँ कि क्या मैं छात्रों के सीखने की प्रक्रिया का प्रामाणिक तौर पर आकलन कर पाई थी। इसका उत्तर हाँ तो है, पर यह एक सीमा तक ही सम्भव था।

किसी अन्य गतिविधि की तरह, प्रोजेक्टों और क्षेत्र दौरों का प्रभावी आकलन काफी कुछ पूर्वविचार करने और योजना बनाने पर निर्भर रहता है। इसके लिए हमें गतिविधि के लक्ष्यों और उद्देश्यों की, तथा उन्हें हासिल करने के लिए आवश्यक तरीकों, और उन उपकरणों के बारे में साफ समझ होना चाहिए, जिनका इस्तेमाल हम यह आकलन करने के लिए करेंगे कि वे उद्देश्य पूरे हुए हैं या नहीं। किसी प्रोजेक्ट को प्रारम्भ करने से पूर्व, यह पूछना हमेशा आवश्यक है कि : ''मैं यह क्यों कर रही हूँ, या इसे करने में मेरा लक्ष्य क्या है? मुझे कैसे पता लगेगा कि प्रोजेक्ट सफल रहा है और मैं यह कैसे सुनिश्चित करूँगी कि छात्र उससे सीखें?'' पर, यहाँ इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि मेरा अपना अनुभव कहता है कि प्रोजेक्ट की प्रक्रिया के दौरान उसके लक्ष्य और उद्देश्य बदल भी सकते हैं और इसके प्रति खुला दिमाग रखने के लिए कुछ लचीलापन जरूरी है।

आकलन की योजना में ही निर्माणात्मक आकलन, जो आपको कार्य की प्रगति के साथ–साथ छात्रों को अपनी प्रतिक्रिया (फीडबैक) देने की सुविधा देता है, और योगात्मक आकलन, जो छात्रों को उनके प्रदर्शन का समग्र आकलन प्रदान करता है, दोनों को शामिल किया जा सकता है। चूँकि बौद्धिक क्षमता विविध प्रकार की होती है, इसलिए आकलन में विविधता का सम्मान करना चाहिए।

> *आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षकों को इसके योग्य बनाया जाए कि जब वे स्थानीय, और इसलिए विशिष्ट, सन्दर्भों के अन्वेषण का आकलन कर रहे हों तो वे मानकीकृत टिप्पणियों को उनके अनुसार संशोधित कर सकें या फिर स्वयं की टिप्पणियाँ रच सकें।*

आकलन को उसकी सत्यता, प्रस्तुत विषयवस्तु की गहराई और समझ, सामग्री की जमावट, सोचने और सम्प्रेषण के कौशल, मौखिक और लिखित प्रस्तुतिकरण, विश्लेषण और उपयोग, और अन्त में, किन्तु जो कतई कम महत्वपूर्ण नहीं है, समूह में काम करने के लिए आवश्यक कौशलों, के आधार पर विभिन्न टिप्पणियों के रूप में दर्ज किया जा सकता है।

सीखने के अन्य पहलुओं के लिए इसी प्रकार की टिप्पणियों और मापदण्डों का उपयोग करके हम किसी भी गतिविधि का काफी असरदार ढंग से आकलन कर सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षकों को इसके योग्य बनाया जाए कि जब वे स्थानीय, और इसलिए विशिष्ट, सन्दर्भों के अन्वेषण का आकलन कर रहे हों तो वे मानकीकृत टिप्पणियों को उनके अनुसार संशोधित कर सकें या फिर स्वयं की टिप्पणियाँ रच सकें। किसी बहुआयामी अनुभव को मोटे तौर पर अंकों या ग्रेडों के माध्यम से निरूपित करते हुए किसी छात्र का प्रामाणिक रूप से आकलन करना न सिर्फ असम्भव होगा बल्कि अन्यायपूर्ण भी होगा।

पर, यह मुझे आकलन से लगभग अपरिहार्य रूप से जुड़े मापन के बारे में कुछ दूसरे बड़े प्रश्नों की ओर ले जाता है जिन्हें पूछना सार्थक हो सकता है:

पूछे जाने वाले प्रश्न

- क्या मापन हमेशा बहुत स्थूल होता है? लोगों के रवैयों और दृष्टिकोणों को, तथा संवेदनशीलता, वस्तुपरकता, समानुभूति जैसे गुणों को कोई कैसे नाप सकता है?क्या ऐसी अमूर्त चीजें किसी अनुभव के तुरन्त बाद सामने आती हैं या फिर जीवन में कुछ समय बाद इनके सामने आने की सम्भावना रहती है? आखिरकार चरित्र का विकास एक ही दिन में तो नहीं होता।

- क्या पहले से, पूरी तरह अनुमानित कोई परिणाम हमेशा सम्भव है, या फिर वांछनीय है?यह बात इस मान्यता के साथ जुड़ी है कि किसी पूर्णतया व्यवस्थित योजना से पूर्व अनुमानित परिणाम निकलना सुनिश्चित है। यह धारणा न तो सीखने की प्रक्रिया में निहित विभिन्न कारकों पर ध्यान देती है, और न ही लक्ष्यों और उद्देश्यों को उनके प्रारम्भ में नियोजित स्वरूप से कभी–कभार आगे जाने की कोई गुंजाइश छोड़ती है।

- पूर्वानुमान और सटीक व्यवस्था से सिखाने या सीखने की प्रक्रिया में रचनात्मकता और सहज स्फूर्तता के लिए बहुत कम जगह बचती है। बिलकुल सटीक टिप्पणी पर गौर करते हुए हम अन्ततः इस पशोपेश में पड़ जाते हैं कि क्या वाकई शिक्षण–अध्ययन की प्रक्रिया इतनी रैखिक है?

- कोई इस सोच विचार में भी पड़ सकता है कि क्या हर बात के हिसाब–किताब को इतनी गम्भीरता से ले लिया गया है कि शिक्षक या फिर सीखने वाले की क्षमता के लिए जरा भी अवसर नहीं छोड़ा गया कि वह पूछताछ को वैसी दिशा और गहराई दे सके जैसी वह चाहता है।

- क्या सबसे अच्छी टिप्पणी भी बच्चों के मस्तिष्क में सूचनाओं के ग्रहण किए जाने और समाहित किए जाने के तरीके की जटिलताओं को पकड़ सकती है?कौन जानता है कि सीखने की प्रक्रिया के दौरान बच्चे के मस्तिष्क में क्या चल रहा होता है?

- रचनात्मकता ''आउट ऑफ द बॉक्स (सोचने के बँधे–बँधाए तरीकों से आगे जाकर)''सोचने से जुड़ी है, और टिप्पणी (रूब्रिक) सोचने का एक और ऐसा बँधा हुआ तरीका है जो अनुमानित और वांछनीय परिणामों को निरूपित करने के लिए बनाया गया है।

- क्या आकलन का सबसे अच्छा स्वरूप भी कभी किसी गतिविधि को जायज ठहरा सकता है?क्या हम प्रोजेक्ट को सीखने के ऐसे तरीके के रूप में देखते हैं जो अपने अन्तर्निहित मूल्य के कारण मूल्यवान है, या सिर्फ इसलिए मूल्यवान है क्योंकि सीखने के सबूत के तौर पर इसका पर्याप्त रूप से आकलन किया जा सकता है? अफसोस! हम सीखने की प्रक्रिया को एकदम सही शब्दों में पकड़ने का जितना अधिक प्रयास करते हैं उतना ही उसका जादू और रहस्य गुम होता जाता है!

- एक अधिक दार्शनिक स्तर पर, हम अन्त में, जवाबदेही के साथ राष्ट्रीय जुनून के बारे में पूछ सकते हैं: क्या हम काम के परिणाम का ठीक आकलन करने के लिए नए–नए ढाँचे, जाँचें, तरीके और सटीक उपकरण बनाने की इच्छा को बुनियादी रूप से लोगों में विश्वास के अभाव के संकेत की तरह देख सकते हैं और उनमें सीधा सम्बन्ध जोड़ सकते हैं? कुछ हद तक हिसाब–किताब की आवश्यकता जरूर होती है, लेकिन आकलन की तकनीकों के लिए सूक्ष्म योजनाएँ बनाने को जरूरत से ज्यादा महत्व देने से होने वाले नुकसान को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

- अन्त में, जो कतई कम महत्वपूर्ण बात नहीं है, कोई यह भी अवश्य पूछेगा कि आज शिक्षा का उद्देश्य क्या है?क्या शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ ''निपुण'' और ''उत्पादक'' कामगार बनाना है या फिर शिक्षा का सारतत्व असीमित रूप से विशाल है? क्या हमारी, हमेशा सीखने का सबूत ढूँढने की कोशिश करने से

सीखने की प्रक्रिया का जादू और चमत्कार अनछुआ बच सकता है?

जिब्रान ने कहा है, ''आप उन्हें अपना प्यार दे सकते हैं किन्तु अपने विचार नहीं। क्योंकि उनके स्वयं के विचार होते हैं। आप उनके शरीर को घर दे सकते हैं लेकिन उनकी आत्माओं को नहीं क्योंकि उनकी आत्माएँ कल के घरों में निवास करती हैं, जिसमें आप नहीं जा सकते, अपने स्वप्न में भी नहीं।''

बच्चों को उनके चारों ओर फैले जीवन के द्वारा दिए जा रहे अनुभवों का सही–सही आकलन करने का प्रयास करते समय हमें हर बच्चे की – बड़ों, जो परिणामों को परिपूर्णता से नियोजित करते हुए प्रतीत होते हैं, के प्रभाव की मदद से या उसके बिना ही – चीजों की अपनी रफ्तार से अपनी समझ विकसित करने की, और अपना वैश्विक दृष्टिकोण रचने की सम्भावित क्षमता के प्रति अपना मस्तिष्क खुला रखने की सख्त जरूरत है। सिर्फ अन्तिम परिणाम के रूप में दिखने वाले और पूर्व अनुमानित सबूत के माध्यम से घटने के बजाय, सीखने का उत्सव उसके मार्ग पर चलने के साथ–साथ घटता है!

अध्ययन के लिए

1. http://jonathan.mueller.faculty.noctrl.edu/toolbox/whatisit.htm- ऑथेन्टिक असैस्मैंट टूलबॉक्स
2. http://www.bie.org. प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग फॉर द 21स्ट सैंचुरी
3. http://pbl-online.org. प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग
4. http://online.org/article.asp?issue=9&article=7. करिकुलम फॉर ऐन ऐन्क्वायरिंग माइण्ड
5. http://online.org/article.asp?issue=11&article=7. पर्स्पैक्टिव ऑन टैस्टिंग

श्रीपर्णा *जे.कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन स्कूल में विगत 15 वर्षों से सामाजिक अध्ययन और अंग्रेजी का अध्यापन करती रही हैं। वे पाठ्यक्रम के विकास और शिक्षकों के प्रशिक्षण से भी जुड़ी रही हैं। इस समय वे अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में एकडेमिक्स एण्ड पेडागोजी समूह में कार्यरत हैं। हाल ही में डिजिटल माध्यम के प्रति उनकी रुचि विकसित हुई है और उन्हें लगता है कि सीखने के रचनात्मक संसाधनों से अध्यापन–कला में बदलाव लाया जा सकता है। उनसे इस sriparna@azimpremjifoundation.org ईमेल पर सम्पर्क किया जा सकता है।*